CHAPTER 10, कबीर

PAGE 124, अभ्यास

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. 'अरे इन दोहुन राह न पाई' से कबीर का क्या आशय है और वे किस राह की बात कर रहे हैं?

www.dreamtopper.in

उत्तर- कबीरदास कहते हैं कि हिंदू और मुसलमान कोई भी एक रास्ता नहीं निकाल सकते क्योंकि हिंदू खुद की प्रशंसा करते हैं और किसी को अपने घड़े को छूने भी नहीं देते। लेकिन वही हिंदू एक गणिका (वेश्या) के पैरों के नीचे सोते हैं। ये कैसा हिंदुत्व है ? मेरा मानना है कि मुस्लिम पीर अली, मुर्गा-मांस खाते हैं और चाची और चाची के घर में शादी करते हैं। पाया जा सकता है। घर में ही सगाई हो जाती है इसलिए दोनों अपना रास्ता नहीं पा सकते हैं ।

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. इस देश में अनेक धर्म, जाति, मज़हब और संप्रदाय के लोग रहते थे किंतु कबीर हिंदू और मुसलमान की ही बात क्यों करते हैं?

उत्तर- कबीर हिंदू और मुस्लिम के बारे में बात करते हैं क्योंकि कबीर खुद ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे और एक बुनकर के घर में पले-बढ़े थे, इसलिए जमीन और आसमान का अंतर देखते हुए, उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों पर लिखा। वे अल्लाह और ईश्वर दोनों ही नहीं, वह निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे, इसलिए उन्होंने मुस्लिमों के लिए लिखा है: -

“कांकड़ पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाए
ता चढ़ी मुला बांग दे ,क्या बहरा हुआ खुदाए” ॥

इसी प्रकार हिन्दू के लिए

“पाहन पूज्यो हरि मिले ,तो मैं पूजूं पहार ,
तांते ये चक्की भली ,जो पीस खाए संसार” ॥

www.dreamtopper.in

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. 'हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई' के माध्यम से कबीर क्या कहना चाहते हैं? वे उनकी किन विशेषताओं की बात करते हैं?

उत्तर- इस कविता के माध्यम से, कबीर दास कहना चाहते हैं कि उन्होंने हिंदुओं की हिन्दुवाई ने देखा है, वे अपने पानी को छूने भी नहीं देते हैं। उन्होंने उन मुसलमानों की तुरकाई भी देखी है जिनके घर खाला की बेटियों की शादी हुई है। यही उनकी खासियत है। इसके माध्यम से, कबीर बताना चाहते हैं कि भगवान या अल्लाह केवल दिल में हैं, फिर भी हिंदू और मुसलमानों के लिए कोई रास्ता नहीं हो सकता है।

www.dreamtopper.in

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. 'कौन राह ह्वै जाई' का प्रश्न कबीर के सामने भी था। क्या इस तरह का प्रश्न आज समाज में मौजूद है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीरदास के समय जो प्रश्न पूछा गया था, वह हिंदू और मुस्लिम के बीच के अंतर से कहीं अधिक है। तब भी लोग एक दूसरे की राय का खंडन करते थे। आज भी वही हो रहा है। हिंदू पूर्व में और पूजा करते हैं, और मुस्लिम हम पश्चिम में नमाज अदा करते हैं। आज राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का मुद्दा 20 सालों से चल रहा है। और तो और अब यह भी चर्चा है कि बजरंगबली एक मुसलमान हैं। जबकि बंदर खुद एक अलग जाति है।

www.dreamtopper.in

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. 'बालम आवो हमारे गेह रे' में कवि किसका आह्वान कर रहा है और क्यों?

उत्तर- इन पंक्तियों के अनुसार, कबीर का अर्थ है बालम यानी ईश्वर है गेह का अर्थ है शरीर। भगवान, आप मेरे शरीर के घर में प्रवेश करें। क्योंकि जीव ही गृह और ब्रह्म भगवान है। वह निर्गुण ब्रह्म का उपासक है और ब्रह्म का आह्वान कर रहा है।

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. 'अन्न न भावै नींद न आवै' का क्या कारण है? ऐसी स्थिति क्यों हो गई है?

www.dreamtopper.in

उत्तर- 'अन्न न भावै नींद न आवै 'का कारण यह है कि कबीरदास जी अपनी पूजा के लिए ब्रह्मा को पाने की इच्छा में इतने तल्लीन हैं और इच्छा इतनी जागृत है कि वे न तो सोते हैं और न ही भगवान के बिना अच्छा महसूस करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि जब लोग भगवान को पाने की प्रतिज्ञा करते हैं, तो भक्त को कुछ भी पसंद नहीं

होता है और जब तक उसकी प्राप्ति नहीं हो जाती है, तब तक हृदय व्याकुल रहता है।

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. 'कामिन को है बालम प्यारा, ज्यों प्यासे को नीर रे' से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'कामिन को है बालम प्यारा,ज्यों प्यासे को नीर रे 'से कवि का अर्थ है कि कामिनी जो अपने पति से प्रेम करना जानती है, उसे अपना पति बहुत प्यारा है । जैसे प्यासे को पानी। इसमें कबीर और भी रहस्यमयी अर्थ बताना चाहते हैं कि जिस तरह से एक महिला अपने पति के लिए प्यारी होती है। उसी प्रकार जीव के लिए ब्रह्म प्यारा है। अगर ब्रह्मा मिल जाए, तो ऐसा लगेगा जैसे प्यास को पानी मिल गया है।

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:8

www.dreamtopper.in

8. कबीर निर्गुण संत परंपरा के कवि हैं और यह पद (बालम आवो हमारे गेह रे) साकार प्रेम की ओर संकेत करता है। इस संबंध में अपने विचार लिखिए।

उत्तर- बालम का शाब्दिक अर्थ पति नहीं है इसका अर्थ है आत्मा के साथ परमात्मा का मिलन। कबीरदास जी को भगवान से मिलने की प्यास है। वह केवल ईश्वर को देखने की इच्छा रखता है। जैसे प्यास के लिए पानी। इसमें कबीर अधिक रहस्यमय हैं। इस अर्थ को बताना चाहते हैं कि जिस तरह एक महिला अपने पति को प्रिय होती है, उसी तरह जीव के लिए ब्रह्म प्यारा है। अगर ब्रह्मा मिल जाए तो ऐसा लगेगा जैसे प्यासे को पानी मिल गया है। इसलिए । कबीरदास जी ब्रह्मा की पूजा के लिए पानी की इच्छा में तल्लीन हैं और इच्छा इतनी जागृत है कि वे न तो सोते हैं और न ही भगवान के बिना अच्छा महसूस करते हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि जब लोग

www.dreamtopper.in

भगवान को प्राप्त करते हैं यदि आप एक प्रतिज्ञा लेते हैं, तो भक्त को कुछ भी पसंद नहीं है और जब तक उसकी प्राप्ति सिद्ध नहीं होती तब तक दिल व्याकुल रहता है।

11:10:1: प्रश्न-अभ्यास:9

9. उदाहरण देते हुए दोनों पदों का काव्य-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य लिखिए।

www.dreamtopper.in

उत्तर- कबीर दास एक व्यंगात्मक कवि थे उनकी हर कविता में व्यंग शामिल रहता था पहले पद में उन्होंने कविता में व्यंग्य शैली को अपनाया है। उस पद में उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों की धार्मिक आडम्बरों पर व्यंग्य किया है। उन्होंने इस तरह के कटाक्ष प्रस्तुत किये हैं कि लोग निरुत्तर हो जाते हैं। इसके अलावा, उन्होंने धार्मिक झगड़ों की ओर इशारा किया है। इस तरह, वह दोनों धर्मों में प्रचलित आडम्बरों को समाप्त करके अपनी

सामाजिक जिम्मेदारी को भी पूरा करने की कोशिश करते है। इस पद की भाषा बहुत ही सरल और आसान है। बिच - बिच में अलंकारों का आना उनके पदों की सुंदरता को बढ़ा देता है ।

दुसरे पद में ये कविता रहस्यवाद की छवि को प्रस्तुत करती है। यहाँ पर उन्होंने भगवान को प्रियतम के रूप में संबोधित किया किया है। और साधक को प्रिया के रूप में प्रस्तुत किया है यहाँ प्रिया द्वरा प्रीतम से मिलने की तड़प का सुंदर वर्णन किया है। साधक अपने प्रभु को पाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है। उसकी स्थिति एक प्रेमिका के समान हो जाती है।इस कविता की भाषा सरल है, जिसमें कवि ने अपनी सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है,।

www.dreamtopper.in